“ कुछ नशा ये तिरंगे की आन का हैं ,कुछ नशा मात्रभूमि की मान का हैं|
हम लहरायेंगे हर जगह ये तिरंगा ,नशा ये हिंदुस्तान की शान का हैं||”

ANSHIKA SINGH, 6 B

जल गए चिराग से ,उड़ गए गुलाल से
होलिया दिवालिया मनाई किस कमाल से
गोलियों की बारिसो में उड़ गए जो ढाल से
बर्फ में डटें रहे जो खून के उबाल से
बर्फ में डटें रहे जो खून के उबाल से||
उनके लिए गर्मिया क्या ,उनके लिए सर्दिया क्या
वर्दीया वर्दीया वर्दीया – ये वर्दीया

वर्दीया वर्दीया वर्दीया – ये वर्दीया
जो वतन के वास्ते खून से सनी रही
रेस –रेस- रेस देश के लिए बनी रही
आन –मान –सान स्वाभिमान के धनी रही
तन हुए थे राख फिर भी खाकिया तनी रही
जोड़ती रही वतन उड़ाके अपनी धज्जिया
वर्दीया वर्दीया वर्दीया – ये वर्दीया
सैनिकों की वर्दीया , सिपाहियो की वर्दीया
सैनिकों की वर्दीया , सिपाहियो की वर्दीया
की दाहिनी कलाई पर है गाँव भर की राखियाँ
बाई जेब मे रखी है बेटियों की चिट्ठिया
ओढ़ के तिरंगा जा रही है देश की भक्तियाँ
कोई क्या मिटाएगा सहादतो की अस्तियाँ
कोई क्या मिटाएगा सहादतो की अस्तियाँ
अब कभी लगाएंगे ना छुट्टियों की अर्जिया
वर्दीया वर्दीया वर्दीया – ये वर्दीया
सैनिकों की वर्दीया , सिपाहियो की वर्दीया
सैनिकों की वर्दीया , सिपाहियो की वर्दीया

“मैं भारतवर्ष का अमिट सम्मान करती हूँ ,यहाँ की मिट्टी का गुणगान करती हूँ |
मुझे चिंता नहीं है स्वर्ग जाकर मोक्ष पाने की ,तिरंगा हो कफन मेरी ,बस यही अरमान करती हूँ |”